

Para 7

Sipara 7 of 30 · 149 Ayahs · Translation: Hindi

Al-Maaida

82

لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدُوًّا لِلَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ ۚ وَلَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُم مَّوَدَّةً لِلَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ الَّذِينَ قَالُوا ۚ إِنَّا نَصْرِي ۚ ذَلِكَ بِأَنَّ مِنْهُمْ قِسِيَّيْنَ وَرَهْبَانًا ۚ وَأَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ

(ऐ रसूल) ईमान लाने वालों का दुश्मन सबसे बढ़के यहूदियों और मुशरिकों को पाओगे और ईमानदारों का दोस्ती में सबसे बढ़के करीब उन लोगों को पाओगे जो अपने को नसारा कहते हैं क्योंकि इन (नसारा) में से यक्कीनी बहुत से आमिल और आबिद हैं और इस सबब से (भी) कि ये लोग हरगिज़ शेखी नहीं करते

83

وَإِذَا سَمِعُوا ۚ مَا أُنْزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَىٰ أَعْيُنُهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا ۚ ۚ مِنَ الْحَقِّ ۚ يَقُولُونَ رَبَّنَا ءَامَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ

और तू देखता है कि जब यह लोग (इस कुरान) को सुनते हैं जो हमारे रसूल पर नाज़िल किया गया है तो उनकी आँखों से बेसाख्ता (छलक कर) आँसू जारी हो जाते हैं क्योंकि उन्होंने (अम्र) हक़ को पहचान लिया है (और) अर्ज़ करते हैं कि ऐ मेरे पालने वाले हम तो ईमान ला चुके तो (रसूल की) तसदीक करने वालों के साथ हमें भी लिख रख

84

وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَنَطْمَعُ أَنْ يُدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ

और हमको क्या हो गया है कि हम खुदा और जो हक़ बात हमारे पास आ चुकी है उस पर तो ईमान न लाएँ और (फिर) खुदा से उम्मीद रखें कि वह अपने नेक बन्दों के साथ हमें (बेहिश्त में) पहुँचा ही देगा

فَأَثْبَهُمُ اللَّهُ بِمَا قَالُوا ۖ جَنَّتٍ ۖ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَذَلِكَ جَزَاءُ
الْمُحْسِنِينَ

तो खुदा ने उन्हें उनके (सदक़ दिल से) अर्ज़ करने के सिले में उन्हें वह (हरे भरे) बाग़ात अता फरमाए जिनके (दरख्तों के) नीचे नहरें जारी हैं (और) वह उसमें हमेशा रहेंगे और (सदक़ दिल से) नेकी करने वालों का यही ऐवज़ है

وَالَّذِينَ كَفَرُوا ۖ وَكَذَّبُوا ۖ بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ

और जिन लोगों ने कुफ़्र एख़्तेयार किया और हमारी आयतों को झुठलाया यही लोग जहन्नुमी हैं

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ لَا تُحَرِّمُوا ۖ طَيِّبَاتِ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۖ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا
يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ

ऐ ईमानदार जो पाक चीज़ें खुदा ने तुम्हारे वास्ते हलाल कर दी हैं उनको अपने ऊपर हराम न करो और हद से न बढ़ो क्यों कि खुदा हद से बढ़ जाने वालों को हरगिज़ दोस्त नहीं रखता

وَكُلُوا ۖ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَّالًا ۖ طَيِّبًا ۖ ۖ وَاتَّقُوا ۖ اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ ۖ مُؤْمِنُونَ

और जो हलाल साफ़ सुथरी चीज़ें खुदा ने तुम्हें दी हैं उनको (शौक़ से) खाओ और जिस खुदा पर तुम ईमान लाए हो उससे डरते रहो

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُمُ الْأَيْمَانَ ۖ فَكَفَرْتُمْ ۖ^٩
 إِطْعَامُ عَشْرَةِ مَسْكِينٍ مِنْ أَوْسَطِ مَا تُطْعَمُونَ أَهْلِيكُمْ أَوْ كِسْوَتُهُمْ أَوْ تَحْرِيرُ
 رَقَبَةٍ ۖ ۖ ۖ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ ۖ ۖ ۖ ذَلِكَ كَفْرَةٌ أَيْمَانِكُمْ إِذَا حَلَفْتُمْ ۖ^٩
 وَأَحْفَظُوا ۖ ۖ ۖ أَيْمَانَكُمْ ۖ ۖ ۖ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ ءَايَاتِهِ ۖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ

खुदा तुम्हारे बेकार (बेकार) कसमों (के खाने) पर तो खैर गिरफ्तार न करेगा मगर बाक़सद (सच्ची) पक्की कसम खाने और उसके खिलाफ करने पर तो ज़रूर तुम्हारी ले दे करेगा (लो सुनो) उसका जुर्माना जैसा तुम खुद अपने एहलोअयाल को खिलाते हो उसी क्रिस्म का औसत दर्जे का दस मोहताजों को खाना खिलाना या उनको कपड़े पहनाना या एक गुलाम आज़ाद करना है फिर जिससे यह सब न हो सके तो मैं तीन दिन के रोज़े (रखना) ये (तो) तुम्हारी कसमों का जुर्माना है जब तुम कसम खाओ (और पूरी न करो) और अपनी कसमों (के पूरा न करने) का ख्याल रखो खुदा अपने एहकाम को तुम्हारे वास्ते यूँ साफ़ साफ़ बयान करता है ताकि तुम शुक्र करो

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ ۖ ۖ إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنْصَابُ وَالْأَزْلُمُ رِجْسٌ ۖ ۖ ۖ مِنْ عَمَلِ
 الشَّيْطَانِ فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

ऐ ईमानदारों शराब, जुआ और बुत और पाँसे तो बस नापाक (बुरे) शैतानी काम हैं तो तुम लोग इससे बचे रहो ताकि तुम फलाह पाओ

إِنَّمَا يُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُوقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدُوَّةَ وَالْبَغْضَاءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ
 عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَعَنِ الصَّلَاةِ ۖ ۖ ۖ فَهَلْ أَنْتُمْ مُنْتَهُونَ

शैतान की तो बस यही तमन्ना है कि शराब और जुए की बदौलत तुममें बाहम अदावत व दुश्मनी डलवा दे और खुदा की याद और नमाज़ से बाज़ रखे तो क्या तुम उससे बाज़ आने वाले हो

وَأَطِيعُوا ۖ ۖ ۖ اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۖ ۖ ۖ الرَّسُولَ وَأَحْذَرُوا ۖ ۖ ۖ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَأَعْلَمُوا ۖ ۖ ۖ أَنَّمَا عَلَى
 رَسُولِنَا الْبَلْغُ الْمُبِينُ

और खुदा का हुक्म मानों और रसूल का हुक्म मानों और (नाफ़रमानी) से बचे रहो इस पर भी अगर तुमने (हुक्म खुदा से) मुँह फेरा तो समझ रखो कि हमारे रसूल पर बस साफ़ साफ़ पैग़ाम पहुँचा देना फर्ज है

لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جُنَاحٌ ۙ فِيمَا طَعِمُوا ۚ إِذَا مَا اتَّقَوْا ۙ
وَعَامَنُوا ۙ الصَّالِحَاتِ ثُمَّ اتَّقَوْا ۙ وَعَامَنُوا ۙ ثُمَّ اتَّقَوْا ۙ وَأَحْسَنُوا ۙ وَاللَّهُ
يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ

(फिर करो चाहे न करो तुम मुखतार हो) जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे (अच्छे) काम किए हैं उन पर जो कुछ खा
(पी) चुके उसमें कुछ गुनाह नहीं जब उन्होंने परहेज़गारी की और ईमान ले आए और अच्छे (अच्छे) काम किए फिर
परहेज़गारी की और नेकियाँ कीं और खुदा नेकी करने वालों को दोस्त रखता है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۙ لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللَّهُ بِشَيْءٍ ۙ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهُ ۙ أَيْدِيكُمْ وَرِمَاحُكُمْ
لِيَعْلَمَ اللَّهُ مَن يَخَافُهُ ۙ بِالْغَيْبِ ۙ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَلِكَ فَلَهُ ۙ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۙ

ऐ ईमानदारों कुछ शिकार से जिन तक तुम्हारे हाथ और नैजें पहुँच सकते हैं खुदा ज़रूर इस्तेहान करेगा ताकि खुदा देख ले कि
उससे बे देखे भाले कौन डरता है फिर उसके बाद भी जो ज्यादाती करेगा तो उसके लिए दर्दनाक अज़ाब है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۙ لَا تَقْتُلُوا ۙ الصَّيْدَ وَأَنْتُمْ حُرْمٌ ۙ وَمَن قَتَلَهُ ۙ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا ۙ
فَجَزَاءٌ ۙ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهِ ۙ ذَوَا عَدْلٍ ۙ مِنْكُمْ هَدْيًا ۙ بَلِغَ الْكَعْبَةِ أَوْ
كَفْرَةً ۙ طَعَامٌ مَّسْكِينٍ أَوْ عَدْلُ ذَلِكَ صِيَامًا ۙ لِّيَذُوقَ وَبَالَ أَمْرِهِ ۙ عَفَا اللَّهُ عَمَّا
سَلَفَ ۙ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللَّهُ مِنْهُ ۙ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ۙ ذُو انْتِقَامٍ

(ऐ ईमानदारों जब तुम हालते एहराम में हो तो शिकार न मारो और तुममें से जो कोई जान बूझ कर शिकार मारेगा तो जिस
(जानवर) को मारा है चौपायों में से उसका मसल तुममें से जो दो मुन्सिफ आदमी तजवीज़ कर दें उसका बदला (देना) होगा
(और) काबा तक पहुँचा कर कुर्बानी की जाए या (उसका) जुर्माना (उसकी क्रीमत से) मोहताजों को खाना खिलाना या उसके
बराबर रोज़े रखना (यह जुर्माना इसलिए है) ताकि अपने किए की सज़ा का मज़ा चखो जो हो चुका उससे तो खुदा ने दरगुज़र
की और जो फिर ऐसी हरकत करेगा तो खुदा उसकी सज़ा देगा और खुदा ज़बरदस्त बदला लेने वाला है

أَحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهُ[؟] مَتَّعًا[؟] لَكُمْ وَالسَّيَّارَةَ[؟] وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ
مَا دُمْتُمْ حُرُمًا[؟] وَأَتَّقُوا[؟] اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ

तुम्हारे और काफ़िले के वास्ते दरियाई शिकार और उसका खाना तो (हर हालत में) तुम्हारे वास्ते जायज़ कर दिया है मगर
खुशकी का शिकार जब तक तुम हालते एहराम में रहो तुम पर हराम है और उस खुदा से डरते रहो जिसकी तरफ (मरने के बाद)
उठाए जाओगे

جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيَمًا[؟] لِلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ
وَالْقَلِيدَ[؟] ذَلِكَ لِتَعْلَمُوا[؟] أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَنَّ اللَّهَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

खुदा ने काबा को जो (उसका) मोहतरम घर है और हुसमत दार महीनों को और कुरबानी को और उस जानवर को जिसके गले में
(कुरबानी के वास्ते) पट्टे डाल दिए गए हों लोगों के अमन कायम रखने का सबब करार दिया यह इसलिए कि तुम जान लो कि
खुदा जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है यक़ीनन (सब) जानता है और ये भी (समझ लो) कि बेशक खुदा हर
चीज़ से वाक़िफ़ है

أَعْلَمُوا[؟] أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ[؟] رَحِيمٌ[؟]

जान लो कि यक़ीनन खुदा बड़ा अज़ाब वाला है और ये (भी) कि बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

مَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا أَلْبَلُغُ[؟] وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ

(हमारे) रसूल पर पैग़ाम पहुँचा देने के सिवा (और) कुछ (फर्ज़) नहीं और जो कुछ तुम ज़ाहिर बा ज़ाहिर करते हो और जो कुछ
तुम छुपा कर करते हो खुदा सब जानता है

قُلْ لَا يَسْتَوِي الْخَبِيثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ أَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيثِ[؟] فَاتَّقُوا[؟] اللَّهَ يَأُو[؟] إِلَى
الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَفْلَحُونَ

(ऐ रसूल) कह दो कि नापाक (हराम) और पाक (हलाल) बराबर नहीं हो सकता अगरचे नापाक की कसरत तुम्हें भला क्यों न
मालूम हो तो ऐसे अक्लमन्दों अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम कामयाब रहो

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا تَسْأَلُوا ۚ عَنْ أَشْيَاءَ إِن تُبَدَّ لَكُمْ تَسْأَلُكُمْ وَإِن تَسْأَلُوا ۚ عَنْهَا حِينَ يُنَزَّلُ الْقُرْءَانُ تُبَدَّ لَكُمْ عَفَا اللَّهُ عَنْهَا ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۚ

ऐ ईमान वालों ऐसी चीजों के बारे में (रसूल से) न पूछा करो कि अगर तुमको मालूम हो जाए तो तुम्हें बुरी मालूम हो और अगर उनके बारे में कुरान नाज़िल होने के वक्त पूछ बैठोगे तो तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएगी (मगर तुमको बुरा लगेगा जो सवालात तुम कर चुके) खुदा ने उनसे दरगुज़र की और खुदा बड़ा बख़्शने वाला बुर्दबार है

قَدْ سَأَلَهَا قَوْمٌ ۚ مِّن قَبْلِكُمْ ثُمَّ أَصْبَحُوا ۚ بِهَا كُفْرِينَ

तुमसे पहले भी लोगों ने इस किस्म की बातें (अपने वक्त के पैग़म्बरों से) पूछी थीं

مَا جَعَلَ اللَّهُ مِنْ ۚ بِحِيرَةٍ ۚ وَلَا سَائِبَةٍ ۚ وَلَا وَصِيلَةٍ ۚ وَلَا حَامٍ ۚ ۚ وَلَكِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۚ وَأَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ

फिर (जब बरदाश्त न हो सका तो) उसके मुन्किर हो गए खुदा ने न तो कोई बहिरा (कान फटी ऊँटनी) मुकर्रर किया है न सायवा (साँढ़) न वसीला (जुडवा बच्चे) न हाम (बुढ़ा साँढ़) मुकर्रर किया है मगर कुफ़्फ़ार खुदा पर ख्वाह मा ख्वाह झूठ (मूठ) बोहतान बाँधते हैं और उनमें के अक्सर नहीं समझते

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا ۚ إِلَىٰ مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ قَالُوا ۚ حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ ءَابَاءَنَا ۚ أَوَلَوْ كَانَ ءَابَاؤُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ شَيْئًا ۚ وَلَا يَهْتَدُونَ

और जब उनसे कहा जाता है कि जो (कुरान) खुदा ने नाज़िल फरमाया है उसकी तरफ और रसूल की आओ (और जो कुछ कहे उसे मानों तो कहते हैं कि हमने जिस (रंग) में अपने बाप दादा को पाया वही हमारे लिए काफी है क्या (ये लोग लकीर के फकीर ही रहेंगे) अगरचे उनके बाप दादा न कुछ जानते ही हों न हिदायत ही पायी हो

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ عَلَيْكُمْ أَنفُسُكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مِّن ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ ۚ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا ۚ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

ऐ ईमान वालों तुम अपनी ख़बर लो जब तुम राहे रास्त पर हो तो कोई गुमराह हुआ करे तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचा सकता तुम सबके सबको खुदा ही की तरफ लौट कर जाना है तब (उस वक्त नेक व बद) जो कुछ (दुनिया में) करते थे तुम्हें बता देगा

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ شَهِدَةُ بَيْنِكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِينَ الْوَصِيَّةِ اثْنَانِ
 ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ أَوْ ءَاخِرَانِ مِّنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَأَصْبَحْتُمْ
 مَصِيبَةُ الْمَوْتِ ۚ تَحْبِسُونَهُمَا مِنْ ۚ بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ إِنْ أَرْتَبْتُمْ لَا
 نَشْتَرِي بِهِ ۚ ثُمَّ ۚ ا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۚ وَلَا نَكْتُمُ شَهِدَةَ اللَّهِ إِنَّآ إِذْ ۚ ا لَمِنَ آلِ ءَاثِمِينَ

ऐ ईमान वालों जब तुममें से किसी (के सर) पर मौत खड़ी हो तो वसीयत के वक्त तुम (मोमिन) में से दो आदिलों की गवाही होनी ज़रूरी है और जब तुम इत्तेफाकन कहीं का सफर करो और (सफर ही में) तुमको मौत की मुसीबत का सामना हो तो (भी) दो गवाह ग़ैर (मोमिन) सही (और) अगर तुम्हें शक हो तो उन दोनों को नमाज़ के बाद रोक लो फिर वह दोनों खुदा की क़सम खाएँ कि हम इस (गवाही) के (ऐवज़ कुछ दाम नहीं लेंगे अगरचे हम जिसकी गवाही देते हैं हमारा अज़ीज़ ही क्यों न) हो और हम खुदा लगती गवाही न छुपाएँगे अगर ऐसा करें तो हम बेशक गुनाहगार हैं

فَإِنْ عُثِرَ عَلَىٰ أَنَّهُمَا أَسْتَحَقَّٰ إِثْمًا ۚ ا فَأَخْرَانِ يَقُومَانِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِينَ أَسْتَحَقَّ
 عَلَيْهِمُ الْأَوَّلِينَ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ لَشَهِدْتِنَا أَحَقُّ مِنْ شَهِدَتِهِمَا وَمَا أَعْتَدَيْنَا إِنَّآ إِذْ ۚ ا
 لَمِنَ الظَّالِمِينَ

अगर इस पर मालूम हो जाए कि वह दोनों (दरोगा हलफ़ी (झूठी कसम) से) गुनाह के मुस्तहक़ हो गए तो दूसरे दो आदमी उन लोगों में से जिनका हक़ दबाया गया है और (मय्यत) के ज्यादा कराबतदार हैं (उनकी तरवीद में) उनकी जगह खड़े हो जाएँ फिर दो नए गवाह खुदा की क़सम खाएँ कि पहले दो गवाहों की निस्बत हमारी गवाही ज्यादा सच्ची है और हमने (हक़) नहीं छुपाया और अगर ऐसा किया हो तो उस वक्त बेशक हम ज़ालिम हैं

ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَن يَأْتُوا ۚ بِالشَّهَدَةِ عَلَىٰ وَجْهٍ أَوْ يَخَافُوا ۚ ا أَنْ تُرَدَّ أَيْمَنُ ۚ ا بَعْدَ
 أَيْمَنِهم ۚ ا وَاتَّقُوا ۚ ا اللَّهَ وَأَسْمَعُوا ۚ ا ۚ ا وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ

ये ज्यादा करीन क़यास है कि इस तरह पर (आख़रत के डर से) ठीक ठीक गवाही दें या (दुनिया की रूसवाई का) अन्देशा हो कि कहीं हमारी क़समें दूसरे फ़रीक़ की क़समों के बाद रद न कर दी जाएँ मुसलमानों खुदा से डरो और (जी लगा कर) सुन लो और खुदा बदचलन लोगों को मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाता

﴿ يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا أُجِبْتُمْ ﴾ ﴿ قَالُوا ﴾ لَا عِلْمَ لَنَا ﴿ إِنَّكَ أَنْتَ عَْلَمُ

الْغُيُوبِ

(उस वक्त को याद करो) जिस दिन खुदा अपने पैग़म्बरों को जमा करके पूछेगा कि (तुम्हारी उममत की तरफ से तबलीग़े एहकाम का) क्या जवाब दिया गया तो अर्ज करेंगे कि हम तो (चन्द ज़ाहिरी बातों के सिवा) कुछ नहीं जानते तू तो खुद बड़ा ग़ैब वॉ है

إِذْ قَالَ اللَّهُ يُعِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِي عَلَيْكَ وَعَلَىٰ وَلَدَتِكَ إِذْ أُيِّدْتُكَ بِرُوحِ
الْقُدُسِ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا ﴿ ١٠٩ ﴾ وَإِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَةَ
وَالْإِنْجِيلَ ﴿ ١١٠ ﴾ وَإِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ بِإِذْنِي فَتَنفُخُ فِيهَا فَتَكُونُ طَيْرًا ﴿ ١١١ ﴾
بِإِذْنِي ﴿ ١١٢ ﴾ وَتُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ بِإِذْنِي ﴿ ١١٣ ﴾ وَإِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِي ﴿ ١١٤ ﴾ وَإِذْ كَفَفْتُ
بَنِي إِسْرَءِيلَ عَنْكَ إِذْ جِئْتَهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا ﴿ ١١٥ ﴾ مِنْهُمْ إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ ﴿ ١١٦ ﴾
مُبِينٌ ﴿ ١١٧ ﴾

(वह वक्त याद करो) जब खुदा फरमाएगा कि ये मरियम के बेटे ईसा हमने जो एहसानात तुम पर और तुम्हारी माँ पर किये उन्हें याद करो जब हमने रूहुलकुदूस (जिबरील) से तुम्हारी ताईद की कि तुम झूले में (पड़े पड़े) और अधेड़ होकर (शक़ सा बातें) करने लगे और जब हमने तुम्हें लिखना और अक़ल व दानाई की बातें और (तौरैत व इन्जील (ये सब चीजे) सिखायी और जब तुम मेरे हुक्म से मिट्टी से चिड़िया की मूरत बनाते फिर उस पर कुछ दम कर देते तो वह मेरे हुक्म से (सचमुच) चिड़िया बन जाती थी और मेरे हुक्म से मादरज़ाद (पैदायशी) अंधे और कोढ़ी को अच्छा कर देते थे और जब तुम मेरे हुक्म से मुर्दों को ज़िन्दा (करके क़ब्रों से) निकाल खड़ा करते थे और जिस वक्त तुम बनी इसराईल के पास मौजिज़े लेकर आए और उस वक्त मैंने उनको तुम (पर दस्त दराज़ी करने) से रोका तो उनमें से बाज़ कुफ़्फ़ार कहने लगे ये तो बस खुला हुआ जादू है

وَإِذْ أُوحِيَتْ إِلَى الْحَوَارِيِّ ﴿ ١١٨ ﴾ أَنْ ءَامِنُوا ﴿ ١١٩ ﴾ بِي وَبِرِسُولِي قَالُوا ﴿ ١٢٠ ﴾ ءَامِنًا وَأَشْهَدُ بِأَنَّنَا
مُسْلِمُونَ

और जब मैंने हवारियों से इलहाम किया कि मुझ पर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ तो अर्ज करने लगे हम ईमान लाए और तू गवाह रहना कि हम तेरे फरमाबरदार बन्दे हैं

إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ يُعِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَنْ يُنْزِلَ عَلَيْنَا مَائِدَةً؟ مِّنَ السَّمَاءِ؟ قَالَ اتَّقُوا؟ اللَّهُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ

(वह वक्त याद करो) जब हवारीयों ने ईसा से अर्ज की कि ऐ मरियम के बेटे ईसा क्या आप का खुदा उस पर कादिर है कि हम पर आसमान से (नेअमत की) एक ख्वान नाज़िल फरमाए ईसा ने कहा अगर तुम सच्चे ईमानदार हो तो खुदा से डरो (ऐसी फरमाइश जिसमें इस्तेहान मालूम हो न करो)

قَالُوا؟ نُرِيدُ أَنْ نَأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوبُنَا وَنَعْلَمَ أَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُونَ عَلَيْهَا مِنَ الشَّاهِدِينَ

वह अर्ज करने लगे हम तो फकत ये चाहते हैं कि इसमें से (बरतकन) कुछ खाएँ और हमारे दिल को (आपकी रिसालत का पूरा पूरा) इत्मेनान हो जाए और यक़ीन कर लें कि आपने हमसे (जो कुछ कहा था) सच फरमाया था और हम लोग इस पर गवाह रहें

قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً؟ مِّنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا عِيدًا؟ لِأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً؟ مِّنْكَ؟ وَأَرْزُقْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ

(तब) मरियम के बेटे ईसा ने (बारगाहे खुदा में) अर्ज की खुदा वन्दा ऐ हमारे पालने वाले हम पर आसमान से एक ख्वान (नेअमत) नाज़िल फरमा कि वह दिन हम लोगों के लिए हमारे अगलों के लिए और हमारे पिछ्लों के लिए ईद का करार पाए (और हमारे हक़ में) तेरी तरफ से एक बड़ी निशानी हो और तू हमें रोज़ी दे और तू सब रोज़ी देने वालो से बेहतर है

قَالَ اللَّهُ إِنِّي مُنْزِلُهَا عَلَيْكُمْ؟ فَمَنْ يَكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَإِنِّي أُعَذِّبُهُ؟ عَذَابًا؟ لَا أُعَذِّبُهُ؟ أَحَدًا؟ مِّنَ الْعَالَمِينَ

खुदा ने फरमाया मैं ख्वान तो तुम पर ज़रूर नाज़िल करूँगा (मगर याद रहे कि) फिर तुममें से जो भी शरूख़ उसके बाद काफ़िर हुआ तो मैं उसको यक़ीन ऐसे सख्त अज़ाब की सज़ा दूँगा कि सारी खुदायी में किसी एक पर भी वैसा (सख्त) अज़ाब न करूँगा

وَإِذْ قَالَ اللَّهُ يُعِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَأَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ إِلَهَيْنِ مِنْ دُونِ
 اللَّهِ ۖ قَالَ سُبْحَنكَ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقٍّ ۖ إِنْ كُنْتُ قُلْتُهُ ۖ فَقَدْ
 عَلِمْتَهُ ۖ ۚ تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ

और (वह वक्त भी याद करो) जब क़यामत में ईसा से खुदा फरमाएगा कि (क्यों) ऐ मरियम के बेटे ईसा क्या तुमने लोगों से ये कह दिया था कि खुदा को छोड़कर मुझे को और मेरी माँ को खुदा बना लो ईसा अर्ज़ करेंगे सुबहान अल्लाह मेरी तो ये मज़ाल न थी कि मैं ऐसी बात मुँह से निकालूँ जिसका मुझे कोई हक़ न हो (अच्छा) अगर मैंने कहा होगा तो तुझको ज़रूर मालूम ही होगा क्योंकि तू मेरे दिल की (सब बात) जानता है हाँ अलबत्ता मैं तेरे जी की बात नहीं जानता (क्योंकि) इसमें तो शक़ ही नहीं कि तू ही ग़ैब की बातें खूब जानता है

مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ ۖ أَنِ اعْبُدُوا ۖ اللَّهُ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۖ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ
 شَهِيدًا ۚ مَا دُمْتُ فِيهِمْ ۖ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتُ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ۖ وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ
 شَيْءٍ شَهِيدٌ

तूने मुझे जो कुछ हुक्म दिया उसके सिवा तो मैंने उनसे कुछ भी नहीं कहा यही कि खुदा ही की इबादत करो जो मेरा और तुम्हारा सबका पालने वाला है और जब तक मैं उनमें रहा उन की देखभाल करता रहा फिर जब तूने मुझे (दुनिया से) उठा लिया तो तू ही उनका निगेहबान था और तू तो खुद हर चीज़ का गवाह (मौजूद) है

إِنْ تُعَذِّبُهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۖ وَإِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

तू अगर उन पर अज़ाब करेगा तो (तू मालिक है) ये तेरे बन्दे हैं और अगर उन्हें बख़्श देगा तो (कोई तेरा हाथ नहीं पकड़ सकता क्योंकि) बेशक तू ज़बरदस्त हिकमत वाला है

قَالَ اللَّهُ هَذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصَّادِقِينَ صِدْقُهُمْ ۖ لَهُمْ جَنَّاتٌ ۖ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
 خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا ۖ عَنْهُ ۖ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ

खुदा फरमाएगा कि ये वह दिन है कि सच्चे बन्दों को उनकी सच्चाई (आज) काम आएगी उनके लिए (हरे भरे बेहिश्त के) वह बाग़ात है जिनके (दरख्तों के) नीचे नहरे जारी हैं (और) वह उसमें अबादुल आबाद तक रहेंगे खुदा उनसे राज़ी और वह खुदा से खुश यही बहुत बड़ी कामयाबी है

لِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ ۚ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ

सारे आसमान व ज़मीन और जो कुछ उनमें है सब खुदा ही की सल्तनत है और वह हर चीज़ पर कादिर (व तवाना) है

Al-An'aam

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَجَعَلَ
الظُّلُمَاتِ وَالنُّورَ ۚ ثُمَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ

सब तारीफ खुदा ही को (सज़ावार) है जिसने बहुतेरे आसमान और ज़मीन को पैदा किया और उसमें मुस्तलिफ़ क़िस्मों की तारीकी रोशनी बनाई फिर (बावजूद उसके) कुफ़ार (औरों को) अपने परवरदिगार के बराबर करते हैं

2

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ طِينٍ ۚ ثُمَّ قَضَىٰ أَجَلًا ۚ أَلَا ۚ وَأَجَلٌ ۚ مُّسَمًّى عِنْدَهُ ۚ ثُمَّ أَنْتُمْ
تَمْتَرُونَ

वह तो वही खुदा है जिसने तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर (फिर तुम्हारे मरने का) एक वक्त मुक़र्रर कर दिया और (अगरचे तुमको मालूम नहीं मगर) उसके नज़दीक (क़यामत) का वक्त मुक़र्रर है

3

وَهُوَ اللَّهُ فِي السَّمَوَاتِ وَفِي الْأَرْضِ ۚ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُونَ

फिर (यही) तुम शक़ करते हो और वही तो आसमानों में (भी) और ज़मीन में (भी) खुदा है वही तुम्हारे ज़ाहिर व बातिन से (भी) ख़बरदार है और वही जो कुछ भी तुम करते हो जानता है

4

وَمَا تَأْتِيهِمْ مِنْ آيَةٍ ۚ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ

और उन (लोगों का) अजब हाल है कि उनके पास खुदा की आयत में से जब कोई आयत आती तो बस ये लोग ज़रूर उससे मुंह फेर लेते थे

5

فَقَدْ كَذَّبُوا ۚ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ ۚ فَسَوْفَ يَأْتِيهِمْ أَنذَارٌ ۚ بَوَّأُوا ۚ مَا كَانُوا ۚ بِهِ ۚ يَسْتَهْزِءُونَ

चुनान्चे जब उनके पास (कुरान बरहक) आया तो उसको भी झुठलाया तो ये लोग जिसके साथ मसखरापन कर रहे है उनकी हक्रीकत उन्हें अनकरीब ही मालूम हो जाएगी

6

أَلَمْ يَرَوْا ۚ كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قَرْنٍ ۚ مَكَّنَّهِمْ فِي الْأَرْضِ مَا لَمْ يُمَكِّنْ لَكُمْ وَأَرْسَلْنَا السَّمَاءَ عَلَيْهِمْ مِدْرَارًا ۚ وَجَعَلْنَا الْأَنْهَارَ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَأَنْشَأْنَا مِنْ ۚ بَعْدِهِمْ قَرْنًا ۚ آخَرِينَ

क्या उन्हें सूझता नहीं कि हमने उनसे पहले कितने गिरोह (के गिरोह) हलाक कर डाले जिनको हमने रुप ज़मीन मे वह (कूवत) कुदरत अता की थी जो अभी तक तुमको नहीं दी और हमने आसमान तो उन पर मूसलाधार पानी बरसता छोड़ दिया था और उनके (मकानात के) नीचे बहती हुई नहरें बना दी थी (मगर) फिर भी उनके गुनाहों की वजह से उनको मार डाला और उनके बाद एक दूसरे गिरोह को पैदा कर दिया

7

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتَابًا ۚ فِي قِرْطَاسٍ ۚ فَلَمَسُوهُ بِأَيْدِيهِمْ لَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ ۚ مُبِينٌ ۚ

और (ऐ रसूल) अगर हम कागज़ पर (लिखी लिखाई) किताब (भी) तुम पर नाज़िल करते और ये लोग उसे अपने हाथों से छू भी लेते फिर भी कुफ़ार (न मानते और) कहते कि ये तो बस खुला हुआ जादू है

8

وَقَالُوا ۚ لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ۚ ۚ وَلَوْ أَنْزَلْنَا مَلَكًا ۚ لَقُضِيَ الْأَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُونَ

और (ये भी) कहते कि उस (नबी) पर कोई फरिश्ता क्यों नहीं नाज़िल किया गया (जो साथ साथ रहता) हालाँकि अगर हम फरिश्ता भेज देते तो (उनका) काम ही तमाम हो जाता (और) फिर उन्हें मोहलत भी न दी जाती

9

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ مَلَكًا ۚ لَجَعَلْنَاهُ رَجُلًا ۚ وَلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَا يَلْبَسُونَ

और अगर हम फरिश्ते को नबी बनाते तो (आखिर) उसको भी मर्द सूरत बनाते और जो शुबहे ये लोग कर रहे हैं वही शुबहे (गोया) हम खुद उन पर (उस वक्त भी) उठा देते

10

وَلَقَدْ أَسْتَهْزِئُ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ

(ऐ रसूल तुम दिल तंग न हो) तुम से पहले (भी) पैग़म्बरों के साथ मसखरापन किया गया है पस जो लोग मसखरापन करते थे उनको उस अज़ाब ने जिसके ये लोग हँसी उड़ाते थे घेर लिया

11

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ ثُمَّ أَنْظَرُوا؟ كَيْفَ كَانَ عِقَابُ الْمُكَذِّبِينَ

(ऐ रसूल उनसे) कहो कि ज़रूर रुए ज़मीन पर चल फिर कर देखो तो कि (अम्बिया के) झुठलाने वालों का क्या (बुरा) अन्जाम हुआ

12

قُلْ لِّمَن مَّا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ؟ قُلْ لِلَّهِ؟ كَتَبَ عَلَىٰ نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ؟ لِيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَمَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ؟ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ

(ऐ रसूल उनसे) पूछो तो कि (भला) जो कुछ आसमान और ज़मीन में है किसका है (वह जवाब देंगे) तुम खुद कह दो कि खास खुदा का है उसने अपनी ज़ात पर मेहरबानी लाज़िम कर ली है वह तुम सब के सब को क़यामत के दिन जिसके आने में कुछ शक़ नहीं ज़रूर जमा करेगा (मगर) जिन लोगों ने अपना आप नुक़सान किया वह तो (क़यामत पर) ईमान न लाएंगे

13

وَلَهُ؟ مَا سَكَنَ فِي اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ؟ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

हालॉकि (ये नहीं समझते कि) जो कुछ रात को और दिन को (रुए ज़मीन पर) रहता (सहता) है (सब) खास उसी का है और वही (सब की) सुनता (और सब कुछ) जानता है

14

قُلْ أَغَيْرَ اللَّهِ أَتَّخِذُ وَلِيًّا؟ فَاطِرِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ؟ قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ؟ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि क्या खुदा को जो सारे आसमान व ज़मीन का पैदा करने वाला है छोड़ कर दूसरे को (अपना) सरपरस्त बनाओ और वही (सब को) रोज़ी देता है और उसको कोई रोज़ी नहीं देता (ऐ रसूल) तुम कह दो कि मुझे हुक्म दिया गया है कि सब से पहले इस्लाम लाने वाला मैं हूँ और (ये भी कि खबरदार) मुशरकीन से न होना

15

قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝

(ऐ रसूल) तुम कहो कि अगर मैं नाफरमानी करूँ तो बेशक एक बड़े (सख्त) दिल के अज़ाब से डरता हूँ

16

مَنْ يُصْرِفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُ ۝ وَذَلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ۝

उस दिन जिस (के सर) से अज़ाब टल गया तो (समझो कि) खुदा ने उस पर (बड़ा) रहम किया और यही तो सरीही कामयाबी है

17

وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ ۝ فَلَا كَاشِفَ لَهُ ۝ إِلَّا هُوَ ۝ وَإِنْ يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ ۝ فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

और अगर खुदा तुम को किसी किसिम की तकलीफ पहुँचाए तो उसके सिवा कोई उसका दफा करने वाला नहीं है और अगर तुम्हें कुछ फायदा पहुँचाए तो भी (कोई रोक नहीं सकता क्योंकि) वह हर चीज़ पर क़ादिर है

18

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۝ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ۝

वही अपने तमाम बन्दों पर ग़ालिब है और वह वाक़िफ़कार हकीम है

19

قُلْ أَيُّ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً ۝ قُلِ اللَّهُ ۝ شَهِيدٌ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۝ وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَذَا الْقُرْآنُ لِأُنذِرَكُمْ بِهِ ۝ وَمَنْ بَلَغَ ۝ أَتَيْنَكُمُ لَتَشْهَدُونَ أَنَّ مَعَ اللَّهِ إِلَهَةً أُخْرَىٰ ۝ قُلْ لَا أَشْهَدُ ۝ قُلْ إِنَّمَا هُوَ إِلَهُهُ ۝ وَحْدٌ ۝ وَإِنِّي بَرِيءٌ ۝ مِمَّا تُشْرِكُونَ ۝

(ऐ रसूल) तुम पूछो कि गवाही में सबसे बड़े कौन चीज़ है तुम खुद ही कह दो कि मेरे और तुम्हारे दरमियान खुदा गवाह है और मेरे पास ये कुरान वही के तौर पर इसलिए नाज़िल किया गया ताकि मैं तुम्हें और जिसे (उसकी) ख़बर पहुँचे उसके ज़रिए से डराओ क्या तुम यक़ीनन यह गवाही दे सकते हो कि अल्लाह के साथ और दूसरे माबूद भी हैं (ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं तो उसकी गवाही नहीं देता (तुम दिया करो) तुम (उन लोगों से) कहो कि वह तो बस एक ही खुदा है और जिन चीज़ों को तुम (खुदा का) शरीक बनाते हो

20

الَّذِينَ ءَاتَيْنَهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ ۚ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ ۚ الَّذِينَ خَسِرُوا ۚ أَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ

मै तो उनसे बेज़र हूँ जिन लोगों को हमने किताब अता फरमाई है (यहूद व नसारा) वह तो जिस तरह अपने बाल बच्चों को पहचानते हैं उसी तरह उस नबी (मोहम्मद) को भी पहचानते हैं (मगर) जिन लोगों ने अपना आप नुकसान किया वह तो (किसी तरह) ईमान न लाएंगे

21

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ

और जो शरूष खुदा पर झूठ बोहतान बाँधे या उसकी आयतों को झुठलाए उससे बढ़के ज़ालिम कौन होगा और ज़ालिमों को हरगिज़ नजात न होगी

22

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ۚ ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ أَيْنَ شُرَكَائُكُمُ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ

और (उस दिन को याद करो) जिस दिन हम उन सबको जमा करेंगे फिर जिन लोगों ने शिर्क किया उनसे पूछेंगे कि जिनको तुम (खुदा का) शरीक ख्याल करते थे कहाँ हैं

23

ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا ۚ وَاللَّهِ رَبَّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ

फिर उनकी कोई शरारत (बाक़ी) न रहेगी बल्कि वह तो ये कहेंगे क़सम है उस खुदा की जो हमारा पालने वाला है हम किसी को उसका शरीक नहीं बनाते थे

24

أَنْظِرْ كَيْفَ كَذَبُوا ۚ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ ۚ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ

(ऐ रसूल भला) देखो तो ये लोग अपने ही ऊपर आप किस तरह झूठ बोलने लगे और ये लोग (दुनिया में) जो कुछ इफ़तेरा परदाज़ी (झूठी बातें) करते थे

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ ۚ وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرٌ ۚ وَإِنْ يَرَوْا ۚ كُلَّ آيَةٍ ۚ لَا يُؤْمِنُوا ۚ بِهَا ۚ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوكَ يُجَادِلُونَكَ يَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ إِنَّ هَٰذَا إِلَّا أَسْطِيرُ الْأَوَّلِينَ

वह सब गायब हो गयी और बाज़ उनमें के ऐसे भी हैं जो तुम्हारी (बातों की) तरफ कान लगाए रहते हैं और (उनकी हठ धर्मी इस हद को पहुँची है कि गोया हमने खुद उनके दिलों पर परदे डाल दिए हैं और उनके कानों में बहरापन पैदा कर दिया है कि उसे समझ न सकें और अगर वह सारी (खुदाई के) मौजिज़े भी देखे लें तब भी ईमान न लाएंगे यहाँ तक (हठ धर्मी पहुँची) कि जब तुम्हारे पास तुम से उलझे हुए आ निकलते हैं तो कुफ़ार (कुरान लेकर) कहा बैठे है (कि भला इसमें रखा ही क्या है) ये तो अगलों की कहानियों के सिवा कुछ भी नहीं

وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْوَنَ عَنْهُ ۚ وَإِنْ يُهْلِكُونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ

और ये लोग (दूसरों को भी) उस के (सुनने से) से रोकते हैं और खुद तो अलग थलग रहते ही हैं और (इन बातों से) बस आप ही अपने को हलाक करते हैं और (अफसोस) समझते नहीं

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذْ يُقْفَوْنَ ۚ عَلَى النَّارِ فَقَالُوا ۚ يَلَيْتَنَّا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبُ بِآيَاتِ رَبِّنَا وَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ

(ऐ रसूल) अगर तुम उन लोगों को उस वक्त देखते (तो ताज्जुब करते) जब जहन्नुम (के किनारे) पर लाकर खड़े किए जाओगे तो (उसे देखकर) कहेंगे ऐ काश हम (दुनिया में) फिर (दुबारा) लौटा भी दिए जाते और अपने परवरदिगार की आयतों को न झुठलाते और हम मोमिनीन से होते (मगर उनकी आरज़ू पूरी न होगी)

بَلْ بَدَا لَهُمْ مَا كَانُوا ۚ يُخْفُونَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَوْ رُدُّوا ۚ لَعَادُوا ۚ لِمَا نُهُوا ۚ عَنْهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ

बल्कि जो (बेईमानी) पहले से छिपाते थे आज (उसकी हकीकत) उन पर खुल गयी और (हम जानते हैं कि) अगर ये लोग (दुनिया में) लौटा भी दिए जाएं तो भी जिस चीज़ की मनाही की गयी है उसे करें और ज़रूर करें और इसमें शक नहीं कि ये लोग ज़रूर झूठे हैं

وَقَالُوا ۖ إِنَّ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ

और कुफ़ार ये भी तो कहते हैं कि हमारी इस दुनिया ज़िन्दगी के सिवा कुछ भी नहीं और (क़यामत वग़ैरह सब ढकोसला है) हम (मरने के बाद) भी उठाए ही न जायेंगे

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذْ يُؤَفَّفُوا ۖ عَلَىٰ رِجْلِهِم ۖ قَالَ أَلَيْسَ هَٰذَا بِالْحَقِّ ۖ قَالُوا ۖ بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۖ قَالَ فَذُوقُوا ۖ الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ

और (ऐ रसूल) अगर तुम उनको उस वक्त देखते (तो ताज्जुब करते) जब वे लोग खुदा के सामने खड़े किए जाएंगे और खुदा उनसे पूछेगा कि क्या ये (क़यामत का दिन) अब भी सही नहीं है वह (जवाब में) कहेंगे कि (दुनिया में) इससे इन्कार करते थे

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا ۖ بِلِقَاءِ اللَّهِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَتْهُمْ السَّاعَةُ بَغْتَةً ۖ قَالُوا ۖ يَحْسِرْتَنَا عَلَىٰ مَا فَرَّطْنَا فِيهَا وَهُمْ يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ ۖ أَلَا سَاءَ مَا يَزُرُونَ

उसकी सज़ा में अज़ाब (के मजे) चखो बेशक जिन लोगों ने क़यामत के दिन खुदा की हुज़ूरी को झुठलाया वह बड़े घाटे में हैं यहाँ तक कि जब उनके सर पर क़यामत नागहा (एक दम आ) पहुँचेगी तो कहने लगेंगे ऐ है अफ़सोस हम ने तो इसमें बड़ी कोताही की (ये कहते जाएंगे) और अपने गुनाहों का पुश्तारा अपनी अपनी पीठ पर लादते जाएंगे देखो तो (ये) क्या बुरा बोझ है जिसको ये लादे (लादे फिर रहे) हैं

وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَعِبٌ ۖ وَلَهُوَ ۖ ۖ وَلِلدَّارِ ۖ أَلْءَاخِرَةِ خَيْرٌ ۖ لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ ۖ أَفَلَا تَعْقِلُونَ

और (ये) दुनियावी ज़िन्दगी तो खेल तमाशे के सिवा कुछ भी नहीं और ये तो ज़ाहिर है कि आखिरत का घर (बेहिश्त) परहेज़गारों के लिए उसके बदर वहाँ (कई गुना) बेहतर है तो क्या तुम (इतना भी) नहीं समझते

قَدْ نَعْلَمُ إِنَّهُ ۚ لَيَحْزُنُكَ الَّذِي يَقُولُونَ ۚ فَإِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُونَكَ وَلَكِنَّ الظَّالِمِينَ بَأْيَتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ

हम खूब जानते हैं कि उन लोगों की बकबक तुम को सदमा पहुँचाती है तो (तुम को समझना चाहिए कि) ये लोग तुम को नहीं झुठलाते बल्कि (ये) ज़ालिम (हकीकतन) खुदा की आयतों से इन्कार करते हैं

وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ ۚ مِّن قَبْلِكَ فَصَبَرُوا ۚ عَلَىٰ مَا كُذِّبُوا ۚ وَأَوْدُوا ۚ حَتَّىٰ أَتَاهُم نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَتِ اللَّهِ ۚ وَلَقَدْ جَاءَكَ مِن نَّبَايَ ۚ الْمُرْسَلِينَ

और (कुछ तुम ही पर नहीं) तुमसे पहले भी बहुतेरे रसूल झुठलाए जा चुके हैं तो उन्होंने अपने झुठलाए जाने और अज़ीयत (व तकलीफ) पर सब्र किया यहाँ तक कि हमारी मदद उनके पास आयी और (क्यों न आती) खुदा की बातों का कोई बदलने वाला नहीं है और पैगम्बर के हालात तो तुम्हारे पास पहुँच ही चुके हैं

وَإِن كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ إِعْرَاضُهُمْ فَإِنِ اسْتَطَعْتَ أَن تَبْتَغِيَ نَفَقًا ۚ فِي الْأَرْضِ أَوْ سُلَّمًا ۚ فِي السَّمَاءِ فَتَأْتِيَهُم بِآيَةٍ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدَىٰ ۚ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْجَاهِلِينَ

अगरचे उन लोगों की रदगिरदानी (मुँह फेरना) तुम पर शाक़ ज़रूर है (लेकिन) अगर तुम्हारा बस चले तो ज़मीन के अन्दर कोई सुरंग ढँढ निकालो या आसमान में सीढ़ी लगाओ और उन्हें कोई मौजिज़ा ला दिखाओ (तो ये भी कर देखो) अगर खुदा चाहता तो उन सब को राहे रास्त पर इकट्ठा कर देता (मगर वह तो इम्तिहान करता है) बस (देखो) तुम हरगिज़ ज़ालिमों में (शामिल) न होना

ۚ إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ الَّذِينَ يَسْمَعُونَ ۚ وَالْمَوْتَىٰ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ

(तुम्हारा कहना तो) सिर्फ वही लोग मानते हैं जो (दिल से) सुनते हैं और मुर्दों को तो खुदा क़यामत ही में उठाएगा फिर उसी की तरफ लौटाए जाएंगे

وَقَالُوا ۖ لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ ۖ مِّن رَّبِّهِ ۚ ۚ قُلْ إِنَّا اللَّهُ قَادِرٌ عَلَىٰ أَنْ يُنْزِلَ آيَةً ۚ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

और कुफ़्फ़ार कहते हैं कि (आखिर) उस नबी पर उसके परवरदिगार की तरफ से कोई मौजिज़ा क्यों नहीं नाज़िल होता तो तुम (उनसे) कह दो कि खुदा मौजिज़े के नाज़िल करने पर ज़रूर क़ादिर है मगर उनमें के अक्सर लोग (खुदा की मसलहतों को) नहीं जानते

وَمَا مِن دَابَّةٍ ۖ فِي الْأَرْضِ وَلَا طَائِرٍ ۖ يَطِيرُ بِجَنَاحَيْهِ إِلَّا أُمَمٌ أَمْثَالُكُمْ ۚ مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتَابِ مِنْ شَيْءٍ ۚ ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُحْشَرُونَ

ज़मीन में जो चलने फिरने वाला (हैवान) या अपने दोनों पंरों से उड़ने वाला परिन्दा है उनकी भी तुम्हारी तरह जमाअतें हैं और सब के सब लौह महफूज़ में मौजूद (हैं) हमने किताब (कुरान) में कोई बात नहीं छोड़ी है फिर सब के सब (चरिन्द हों या परिन्द) अपने परवरदिगार के हुज़ूर में लाए जायेंगे।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا ۖ بِآيَاتِنَا صُمُّ ۚ وَبُكْمٌ ۚ فِي الظُّلُمَاتِ ۚ مَن يَشَاءِ اللَّهُ يُضْلِلْهُ وَمَن يَشَأْ يُجْعَلْهُ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۚ

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठला दिया गोया वह (कुफ़्र के घटाटोप) ँधेरों में गूंगें बहरे (पड़े हैं) खुदा जिसे चाहे उसे गुमराही में छोड़ दे और जिसे चाहे उसे सीधे ढर्रे पर लगा दे

قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنِ اتَّكُم عَذَابُ اللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ السَّاعَةُ أَغَيْرَ اللَّهِ تَدْعُونَ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ

(ऐ रसूल उनसे) पूछो तो कि क्या तुम यह समझते हो कि अगर तुम्हारे सामने खुदा का अज़ाब आ जाए या तुम्हारे सामने क़यामत ही आ खड़ी मौजूद हो तो तुम अगर (अपने दावे में) सच्चे हो तो (बताओ कि मदद के वास्ते) क्या खुदा को छोड़कर दूसरे को पुकारोगे

بَلْ إِيَّاهُ تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِن شَاءَ وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُونَ

(दूसरों को तो क्या) बल्कि उसी को पुकारोगे फिर अगर वह चाहेगा तो जिस के वास्ते तुमने उसको पुकारा है उसे दफा कर देगा और (उस वक्त) तुम दूसरे माबूदों को जिन्हे तुम (खुदा का) शरीक समझते थे भूल जाओगे

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ فَأَخَذْنَاهُم بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُونَ

और (ऐ रसूल) जो उम्मतें तुमसे पहले गुज़र चुकी हैं हम उनके पास भी बहुतेरे रसूल भेज चुके हैं फिर (जब नाफ़रमानी की) तो हमने उनको सख्ती

فَلَوْلَا إِذْ جَاءَهُمْ بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا؟ وَلَكِنْ قَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ مَا كَانُوا؟ يَعْمَلُونَ

और तकलीफ़ में गिरफ़्तार किया ताकि वह लोग (हमारी बारगाह में) गिड़गिड़ाए तो जब उन (के सर) पर हमारा अज़ाब आ खड़ा हुआ तो वह लोग क्यों नहीं गिड़गिड़ाए (कि हम अज़ाब दफा कर देते) मगर उनके दिल तो सख्त हो गए थे और उनकी कारस्तानियों को शैतान ने आरास्ता कर दिखाया था (फिर क्योंकर गिड़गिड़ाते)

فَلَمَّا نَسُوا؟ مَا ذُكِّرُوا؟ بِهِ؟ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ حَتَّىٰ إِذَا فَرِحُوا؟ بِمَا أُوتُوا؟ أَخَذْنَاهُمْ بَغْتَةً؟ فَإِذَا هُمْ مُبْلِسُونَ

फिर जिसकी उन्हें नसीहत की गयी थी जब उसको भूल गए तो हमने उन पर (ढील देने के लिए) हर तरह की (दुनियावी) नेअमतों के दरवाज़े खोल दिए यहाँ तक कि जो नेअमतें उनको दी गयी थी जब उनको पाकर खुश हुए तो हमने उन्हें नागाहाँ (एक दम) ले डाला तो उस वक्त वह नाउम्मीद होकर रह गए

فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِينَ ظَلَمُوا؟ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

फिर ज़ालिम लोगों की जड़ काट दी गयी और सारे जहाँ के मालिक खुदा का शुक्र है

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ وَأَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ مِّنْ إِلَهِ غَيْرِ اللَّهِ يَأْتِيَكُمْ بِهِ؟ أُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُونَ

(कि क्रिस्सा पाक हुआ) (ऐ रसूल) उनसे पूछो तो कि क्या तुम ये समझते हो कि अगर खुदा तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें लें ले और तुम्हारे दिलों पर मोहर कर दे तो खुदा के सिवा और कौन मौजूद है जो (फिर) तुम्हें ये नेअमतें (वापस) दे (ऐ रसूल) देखो तो हम किस किस तरह अपनी दलीले बयान करते हैं इस पर भी वह लोग मुँह मोड़े ज़ाते हैं

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ بَغْتَةً أَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ إِلَّا الْقَوْمُ الظَّالِمُونَ

(ऐ रसूल) उनसे पूछो कि क्या तुम ये समझते हो कि अगर तुम्हारे सर पर खुदा का अज़ाब बेखबरी में या जानकारी में आ जाए तो क्या गुनाहगारों के सिवा और लोग भी हलाक किए जाएंगे (हरगिज़ नहीं)

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ ۚ فَمَنْ ءَامَنَ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ

और हम तो रसूलों को सिर्फ इस ग़रज़ से भेजते हैं कि (नेको को जन्नत की) खुशखबरी दें और (बदो को अज़ाब जहन्नूम से) डराएं फिर जिसने ईमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए तो ऐसे लोगों पर (क़यामत में) न कोई खौफ होगा और न वह ग़मगीन होंगे

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا ۖ بِآيَاتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوا ۚ يَفْسُقُونَ

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया तो चूंकि बदकारी करते थे (हमारा) अज़ाब उनको पलट जाएगा

قُلْ لَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ إِنِّي مَلَكٌ ۚ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ ۚ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ۚ أَفَلَا تَتَفَكَّرُونَ

(ऐ रसूल) उनसे कह दो कि मैं तो ये नहीं कहता कि मेरे पास खुदा के खज़ाने हैं (कि ईमान लाने पर दे दूंगा) और न मैं ग़ैब के (कुल हालात) जानता हूँ और न मैं तुमसे ये कहता हूँ कि मैं फरिश्ता हूँ मैं तो बस जो (खुदा की तरफ से) मेरे पास वही की जाती है उसी का पाबन्द हूँ (उनसे पूछो तो) कि अन्धा और आँख वाला बराबर हो सकता है तो क्या तुम (इतना भी) नहीं सोचते

وَأَنْذِرْ بِهِ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْ يُحْشَرُوا ۚ إِلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ لَيْسَ لَهُمْ مِنْ دُونِهِ ۚ وَلِيٌّ ۚ وَلَا شَفِيعٌ ۚ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ

और इस क़ुरान के ज़रिए से तुम उन लोगों को डराओ जो इस बात का खौफ रखते हैं कि वह (मरने के बाद) अपने खुदा के सामने जमा किये जायेंगे (और यह समझते हैं कि) उनका खुदा के सिवा न कोई सरपरस्त है और न कोई सिफारिश करने वाला ताकि ये लोग परहेज़गार बन जाएं

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ ۖ ۚ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ ۚ وَمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِنْ شَيْءٍ ۚ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُونَ مِنَ الظَّالِمِينَ

और (ऐ रसूल) जो लोग सुबह व शाम अपने परवरदिगार से उसकी खुशनूदी की तमन्ना में दुआँए माँगा करते हैं- उनको अपने पास से न धुत्कारो-न उनके (हिसाब किताब की) जवाब देही कुछ उनके ज़िम्मे है ताकि तुम उन्हें (इस ख्याल से) धुत्कार बताओ तो तुम ज़ालिम (के शुमार) में हो जाओगे

وَكَذَلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُم بِبَعْضٍ ۚ لِيَقُولُوا ۚ أَهَؤُلَاءِ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنْ بَيْنِنَا ۚ أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِالشَّكِرِينَ

और इसी तरह हमने बाज़ आदमियों को बाज़ से आजमाया ताकि वह लोग कहें कि हाएँ क्या ये लोग हममें से हैं जिन पर खुदा ने अपना फ़ज़ल व करम किया है (यह तो समझते की) क्या खुदा शुक्र गुज़ारों को भी नहीं जानता

وَإِذَا جَاءَكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِنَا فَقُلْ سَلِّمْ عَلَيْكُمْ ۖ ۚ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلَىٰ نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۖ ۚ أَنَّهُ ۖ ۚ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوءًا ۖ ۚ أَوْ بِجَهْلَةٍ ۖ ۚ ثُمَّ تَابَ مِنْ ۖ ۚ بَعْدِهِ ۖ ۚ وَأَصْلَحَ ۖ ۚ فَإِنَّهُ ۖ ۚ غَفُورٌ ۖ ۚ رَحِيمٌ ۖ ۚ

और जो लोग हमारी आयतों पर ईमान लाए हैं तुम्हारे पास आँए तो तुम सलामुन अलैकुम (तुम पर खुदा की सलामती हो) कहो तुम्हारे परवरदिगार ने अपने ऊपर रहमत लाज़िम कर ली है बेशक तुम में से जो शरूख नादानी से कोई गुनाह कर बैठे उसके बाद फिर तौबा करे और अपनी हालत की (असलाह करे खुदा उसका गुनाह बरख़्त देगा क्योंकि) वह यकीनी बड़ा बरख़्तने वाला मेहरबान है

وَكَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ لَّا يَعْلَمُونَ ۖ ۚ

और हम (अपनी) आयतों को यूँ तफ़सील से बयान करते हैं ताकि गुनाहगारों की राह (सब पर) खुल जाए और वह इस पर न चले

قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ قُلْ لَا أَتَّبِعُ أَهْوَاءَكُمْ ۚ قَدْ ضَلَلْتُ إِذًا ۚ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُهْتَدِينَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मुझसे उसकी मनाही की गई है कि मैं खुदा को छोड़कर उन माबूदों की इबादत करूं जिन को तुम पूजा करते हो (ये भी) कह दो कि मैं तो तुम्हारी (नाफसानी) स्वाहिश पर चलने का नहीं (वरना) फिर तो मैं गुमराह हो जाऊँगा और हिदायत याफता लोगों में न रहूँगा

قُلْ إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ ۚ مِّنْ رَبِّي وَكَذَّبْتُمْ بِهِ ۚ مَا عِندِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ ۚ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۚ يَقْصُ الْحَقُّ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْفَصِيلِينَ

तुम कह दो कि मैं तो अपने परवरदिगार की तरफ से एक रौशन दलील पर हूँ और तुमने उसे झुठला दिया (तो) तुम जिस की जल्दी करते हो (अज़ाब) वह कुछ मेरे पास (एख्तियार में) तो है नहीं हुकूमत तो बस ज़रूर खुदा ही के लिए है वह तो (हक़) बयान करता है और वह तमाम फैसला करने वालों से बेहतर है

قُلْ لَّوْ أَنَّ عِندِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ ۚ لَفُضِيَ الْأَمْرُ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ

(उन लोगों से) कह दो कि जिस (अज़ाब) की तुम जल्दी करते हो अगर वह मेरे पास (एख्तियार में) होता तो मेरे और तुम्हारे दरमियान का फैसला कब का चुक गया होता और खुदा तो ज़ालिमों से खूब वाकिफ़ है

ۚ وَعِنْدَهُ ۚ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٌ ۚ فِي ظُلُمَاتِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٌ ۚ وَلَا يَابِسٌ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۚ

और उसके पास ग़ैब की कुन्जियाँ हैं जिनको उसके सिवा कोई नहीं जानता और जो कुछ खुशकी और तरी में है उसको (भी) वही जानता है और कोई पत्ता भी नहीं खटकता मगर वह उसे ज़रूर जानता है और ज़मीन की तारिकियों में कोई दाना और न कोई शुष्क चीज़ है मगर वह नूरानी किताब (लौहे महफूज़) में मौजूद है

وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُم بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضَىٰ أَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ

वह वही (खुदा) है जो तुम्हें रात को (नींद में एक तरह पर दुनिया से) उठा लेता है और जो कुछ तुमने दिन को किया है जानता है फिर तुम्हें दिन को उठा कर खड़ा करता है ताकि (ज़िन्दगी की) (वह) मियाद जो (उसके इल्म में) मुअय्युन है पूरी की जाए फिर (तो आखिर) तुम सबको उसी की तरफ लौटना है फिर जो कुछ तुम (दुनिया में भला बुरा) करते हो तुम्हें बता देगा

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۚ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَكُمْ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُونَ

वह अपने बन्दों पर गालिब है वह तुम लोगों पर निगेहबान (फ़रिश्ततें तैनात करके) भेजता है-यहाँ तक कि जब तुम में से किसी की मौत आए तो हमारे भेजे हुये फ़रिश्ते उसको (दुनिया से) उठा लेते हैं और वह (हमारे तामीले हुक्म में ज़रा भी) कोताही नहीं करते

ثُمَّ رُدُّوهُ ۚ إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقُّ ۚ أَلَا لَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ أَسْرَعُ الْحُسَيْنِ

फिर ये लोग अपने सच्चे मालिक खुदा के पास वापस बुलाए गए-आगाह रहो कि हुक्मत खास उसी के लिए है और वह सबसे ज्यादा हिसाब लेने वाला है

قُلْ مَنْ يُنَجِّيكُمْ مِّنْ ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُونَهُ ۚ تَضَرُّعًا ۚ وَخُفْيَةً ۚ لَّئِنْ أَنجَيْنَا مِنْ هَذِهِ ۚ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ

(ऐ रसूल) उनसे पूछो कि तुम खुशकी और तरी के (घटाटोप) एँधेरों से कौन छुटकारा देता है जिससे तुम गिड़ गिड़ाकर और (चुपके) दुआएं माँगते हो कि अगर वह हमें (अब की दफ़ा) उस (बला) से छुटकारा दे तो हम ज़रूर उसके शुक्र गुज़ार (बन्दे होकर) रहेंगे

قُلْ اللَّهُ يُنَجِّيكُمْ مِنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ۚ ثُمَّ أَنْتُمْ تُشْرِكُونَ

तुम कहो उन (मुसीबतों) से और हर बला में खुदा तुम्हें नज़ात देता है (मगर अफसोस) उस पर भी तुम शिर्क करते ही जाते हो

قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَىٰ أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا ۖ أَمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ أَوْ مِن تَحْتَ أَرْجُلِكُمْ أَوْ يَلْبَسَكُمْ شِيْعًا ۖ وَيُذِيقَ بَعْضَكُمْ بَأْسَ بَعْضٍ ۚ أَنْظِرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि वही उस पर अच्छी तरह काबू रखता है कि अगर (चाहे तो) तुम पर अज़ाब तुम्हारे (सर के) ऊपर से नाज़िल करे या तुम्हारे पाँव के नीचे से (उठाकर खड़ा कर दे) या एक गिरोह को दूसरे से भिड़ा दे और तुम में से कुछ लोगों को बाज़ आदमियों की लड़ाई का मज़ा चखा दे ज़रा ग़ौर तो करो हम किस किस तरह अपनी आयतों को उलट पुलट के बयान करते हैं ताकि लोग समझे

وَكَذَّبَ بِهِ ۚ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ۚ قُلْ لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ۚ

और उसी (कुरान) को तुम्हारी क़ौम ने झुठला दिया हालाँकि वह बरहक़ है (ऐ रसूल) तुम उनसे कहो कि मैं तुम पर कुछ निगेहबान तो हूँ नहीं हर ख़बर (के पूरा होने) का एक खास वक्त मुक़रर है और अनक़रीब (जल्दी) ही तुम जान लोगे

لِكُلِّ نَبَأٍ ۚ مُّسْتَقَرُّ ۚ وَسَوْفَ تَعْلَمُونَ

और जब तुम उन लोगों को देखो जो हमारी आयतों में बेहूदा बहस कर रहे हैं तो उन (के पास) से टल जाओ यहाँ तक कि वह लोग उसके सिवा किसी और बात में बहस करने लगे और अगर (हमारा ये हुक्म) तुम्हें शैतान भुला दे तो याद आने के बाद ज़ालिम लोगों के साथ हरगिज़ न बैठना

وَإِذَا رَأَيْتَ الَّذِينَ يَخُوضُونَ فِي آيَاتِنَا فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتَّىٰ يَخُوضُوا ۚ فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۚ ۚ وَإِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرِىٰ مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ

और ऐसे लोगों (के हिसाब किताब) का जवाब देही कुछ परहेज़गारों पर तो है नहीं मगर (सिर्फ नसीहतन) याद दिलाना (चाहिए) ताकि ये लोग भी परहेज़गार बनें

وَمَا عَلَى الَّذِينَ يَتَّقُونَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ ۚ وَلَكِنْ ذِكْرٌ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ

और जिन लोगों ने अपने दीन को खेल और तमाशा बना रखा है और दुनिया की ज़िन्दगी ने उन को धोके में डाल रखा है ऐसे लोगों को छोड़ो और कुरान के ज़रिए से उनको नसीहत करते रहो (ऐसा न हो कि कोई) शरूष अपने करतूत की बदौलत मुब्तिलाए बला हो जाए (क्योंकि उस वक्त) तो खुदा के सिवा उसका न कोई सरपरस्त होगा न सिफारिशी और अगर वह अपने गुनाह के ऐवज़ सारे (जहाँ का) बदला भी दे तो भी उनमें से एक न लिया जाएगा जो लोग अपनी करनी की बदौलत मुब्तिलाए बला हुए है उनको पीने के लिए खौलता हुआ गर्म पानी (मिलेगा) और (उन पर) दर्दनाक अज़ाब होगा क्योंकि वह कुफ़्र किया करते थे

وَذَرِ الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَعِبًا ۖ وَلَهُمْ آٰ وَغَرَّتُهُمُ الْحَيَوةُ الدُّنْيَا ۚ وَذَكَرَ بِهِ ۚ أَنْ تَبْسُلَ نَفْسٌ ۚ بِمَا كَسَبَتْ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيٌّ ۚ وَلَا شَفِيعٌ ۚ وَإِنْ تَعْدِلْ كُلُّ عَدْلٍ ۚ لَا يُؤْخَذُ مِنْهَا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ أُبْسِلُوا ۚ بِمَا كَسَبُوا ۚ ۚ لَهُمْ شَرَابٌ ۚ مِنْ حَمِيمٍ ۚ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ بِمَا كَانُوا ۚ يَكْفُرُونَ

(ऐ रसूल) उनसे पूछो तो कि क्या हम लोग खुदा को छोड़कर उन (माबूदों) से मुनाज़ात (दुआ) करे जो न तो हमें नफ़ा पहुंचा सकते हैं न हमारा कुछ बिगाड़ ही सकते हैं- और जब खुदा हमारी हिदायत कर चुका) उसके बाद उल्टे पावँ कुफ़्र की तरफ उस शरूष की तरह फिर जाएं जिसे शैतानों ने जंगल में भटका दिया हो और वह हैरान (परेशान) हो (कि कहा जाए क्या करें) और उसके कुछ रफ़ीक़ हो कि उसे राहे रास्त (सीधे रास्ते) की तरफ पुकारते रह जाएं कि (उधर) हमारे पास आओ और वह एक न सुने (ऐ रसूल) तुम कह दो कि हिदायत तो बस खुदा की हिदायत है और हमें तो हुक्म ही दिया गया है कि हम सारे जहाँ के परवरदिगार खुदा के फरमाबरदार हैं

قُلْ أَدْعُوا ۚ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلَىٰ أَعْقَابِنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْنَا اللَّهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيَاطِينُ فِي الْأَرْضِ حَيْرَانَ لَهُ ۚ أَصْحَابٌ ۚ يَدْعُونَهُ ۚ إِلَىٰ الْهُدَىٰ أُتِينَا ۚ قُلْ إِنْ هَدَىٰ اللَّهُ هُوَ الْهُدَىٰ ۚ وَأَمْرًا لِنُسَلِّمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ

और ये (भी हुक्म हुआ है) कि पाबन्दी से नमाज़ पढ़ा करो और उसी से डरते रहो और वही तो वह (खुदा) है जिसके हुज़ूर में तुम सब के सब हाज़िर किए जाओगे

وَأَنْ أَقِيمُوا ۚ الصَّلَاةَ وَآتَوْهُ ۚ وَهُوَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ

वह तो वह (खुदा है) जिसने ठीक ठीक बहुतेरे आसमान व ज़मीन पैदा किए और जिस दिन (किसी चीज़ को) कहता है कि हो जा तो (फौरन) हो जाती है

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ وَيَوْمَ يَقُولُ كُنْ فَيَكُونُ ۚ قَوْلُهُ الْحَقُّ ۚ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ ۚ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ

उसका क़ौल सच्चा है और जिस दिन सूर फूँका जाएगा (उस दिन) खास उसी की बादशाहत होगी (वही) ग़ायब हाज़िर (सब) का जानने वाला है और वही दाना वाकिफ़कार है

ۚ وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ عَازَرَ اتَّخِذْ أَصْنَامًا ۚ إِنَّي أَرَكَ وَقَوْمَكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۚ

(ऐ रसूल) उस वक्त का याद करो) जब इबराहीम ने अपने (मुँह बोले) बाप आज़र से कहा क्या तुम बुतों को खुदा मानते हो-मैं तो तुमको और तुम्हारी क़ौम को खुली गुमराही में देखता हूँ

وَكَذَلِكَ نُرِي إِبْرَاهِيمَ مَلَكُوتَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلِيَكُونَ مِنَ الْمُوقِنِينَ

और (जिस तरह हमने इबराहीम को दिखाया था कि बुत काबिले परसतिश (पूजने के काबिल) नहीं) उसी तरह हम इबराहीम को सारे आसमान और ज़मीन की सल्तनत का (इन्तज़ाम) दिखाते रहे ताकि वह (हमारी वहदानियत का) यक़ीन करने वालों से हो जाएं

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ رَأَى كَوْكَبًا ۚ ۚ قَالَ هَذَا رَبِّي ۚ فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَا أُحِبُّ آلَ أَفْلِينَ

तो जब उन पर रात की तारीक़ी (अंधेरा) छा गयी तो एक सितारे को देखा तो दफ़ातन बोल उठे (हाए क्या) यही मेरा खुदा है फिर जब वह डूब गया तो कहने लगे गुरुब (डूब) हो जाने वाली चीज़ को तो मैं (खुदा बनाना) पसन्द नहीं करता

فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِغًا ۙ قَالَ هَذَا رَبِّي ۚ فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِي رَبِّي لَأَكُونَنَّ
مِنَ الْقَوْمِ الضَّالِّينَ

फिर जब चाँद को जगमगाता हुआ देखा तो बोल उठे (क्या) यही मेरा खुदा है फिर जब वह भी गुरुब हो गया तो कहने लगे कि अगर (कहीं) मेरा (असली) परवरदिगार मेरी हिदायत न करता तो मैं जरूर गुमराह लोगों में हो जाता

فَلَمَّا رَأَى الشَّمْسَ بَازِغَةً ۙ قَالَ هَذَا رَبِّي هَذَا أَكْبَرُ ۚ فَلَمَّا أَفَلَتْ قَالَ يُقَوْمُ إِنِّي
بَرِيءٌ ۙ مِمَّا تُشْرِكُونَ

फिर जब आफताब को दमकता हुआ देखा तो कहने लगे (क्या) यही मेरा खुदा है ये तो सबसे बड़ा (भी) है फिर जब ये भी गुरुब हो गया तो कहने लगे ऐ मेरी क्रौम जिन जिन चीजों को तुम लोग (खुदा का) शरीक बनाते हो उनसे मैं बेज़ार हूँ

إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا ۙ وَمَا أَنَا ۙ مِنَ
الْمُشْرِكِينَ

(ये हरगिज़ नहीं हो सकते) मैंने तो बातिल से कतराकर उसकी तरफ से मुँह कर लिया है जिसने बहुतेरे आसमान और ज़मीन पैदा किए और मैं मुशरेकीन से नहीं हूँ

وَحَاجَّهٖ ۙ قَوْمُهُ ۙ قَالَ أَتُحْجَوْنِي فِي اللَّهِ وَقَدْ هَدَانِ ۙ وَلَا أَخَافُ مَا تُشْرِكُونَ
بِهِ ۙ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ رَبِّي شَيْئًا ۙ وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۙ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ

और उनकी क्रौम के लोग उनसे हुज्जत करने लगे तो इबराहीम ने कहा था क्या तुम मुझसे खुदा के बारे में हुज्जत करते हो हालाँकि वह यक़ीनी मेरी हिदायत कर चुका और तुम मे जिन बुतों को उसका शरीक मानते हो मैं उनसे डरता (वरता) नहीं (वह मेरा कुछ नहीं कर सकते) मगर हॉ मेरा खुदा खुद (करना) चाहे तो अलबत्ता कर सकता है मेरा परवरदिगार तो बाएतबार इल्म के सब पर हावी है तो क्या उस पर भी तुम नसीहत नहीं मानते

وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُمْ بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ ۚ عَلَيْكُمْ سُلْطَانٌ ۚ فَأَيُّ الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ ۚ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ

और जिन्हें तुम खुदा का शरीक बताते हो मैं उन से क्यों डरूँ जब तुम इस बात से नहीं डरते कि तुमने खुदा का शरीक ऐसी चीजों को बनाया है जिनकी खुदा ने कोई सनद तुम पर नहीं नाज़िल की फिर अगर तुम जानते हो तो (भला बताओ तो सही कि) हम दोनों फरीक (गिरोह) में अमन कायम रखने का ज्यादा हकदार कौन है

الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَلَمْ يَلْبِسُوا ۚ إِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُو۟لَٰئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُونَ

जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अपने ईमान को जुल्म (शर्क) से आलूदा नहीं किया उन्हीं लोगों के लिए अमन (व इतमिनान) है और यही लोग हिदायत याफ़ता हैं

وَتِلْكَ حُجَّتُنَا ءَاتَيْنَاهَا إِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ ۚ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ ۚ مِّنْ نَّشَأٍ ۚ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۚ

और ये हमारी (समझाई बुझाई) दलीलें हैं जो हमने इबराहीम को अपनी क़ौम पर (शालिब आने के लिए) अता की थी हम जिसके मरतबे चाहते हैं बुलन्द करते हैं बेशक तुम्हारा परवरदिगार हिकमत वाला बाख़बर है

وَوَهَبْنَا لَهُ ۖ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۚ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوحًا هَدَيْنَا مِن قَبْلُ ۚ وَمِن ذُرِّيَّتِهِ ۚ دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ وَأَيُّوبَ وَيُوسُفَ وَمُوسَىٰ وَهَارُونَ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ

और हमने इबराहीम को इसहाक़ वा याक़ूब (सा बेटा पोता) अता किया हमने सबकी हिदायत की और उनसे पहले नूह को (भी) हम ही ने हिदायत की और उन्हीं (इबराहीम) को औलाद से दाऊद व सुलेमान व अय्यूब व यूसुफ़ व मूसा व हारून (सब की हमने हिदायत की) और नेकों कारों को हम ऐसा ही इल्म अता फरमाते हैं

وَزَكَرِيَّا وَيَحْيَىٰ وَعِيسَىٰ وَإِلْيَاسَ ۚ كُلُّهُم مِّنَ الصَّالِحِينَ

और ज़करिया व यहया व ईसा व इलियास (सब की हिदायत की (और ये) सब (खुदा के) नेक बन्दों से हैं

وَإِسْمَاعِيلَ وَإِلْيَسَ وَيُونُسَ وَلُوطًا ۚ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعَالَمِينَ

और इसमाइल व इलियास व यूनूस व लूत (की भी हिदायत की) और सब को सारे जहाँन पर फज़ीलत अता की

وَمِنْ ءَابَائِهِمْ وَذُرِّيَّتِهِمْ وَإِخْوَانِهِمْ ۖ وَاجْتَبَيْنَاهُمْ وَهَدَيْنَاهُمْ إِلَى صِرَاطٍ ۖ مُسْتَقِيمٍ ۚ

और (सिर्फ उन्हीं को नहीं बल्कि) उनके बाप दादाओं और उनकी औलाद और उनके भाई बन्दों में से (बहुतेरों को) और उनके मुन्तखिब किया और उन्हें सीधी राह की हिदायत की

ذَٰلِكَ هُدَىٰ ٱللَّهِ يَهْدِي بِهِ ۖ مَن يَشَآءُ مِّنْ عِبَادِهِ ۖ ۚ وَلَوْ أَشْرَكُوا ۚ لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ

(देखो) ये खुदा की हिदायत है अपने बन्दों से जिसको चाहे उसीकी वजह से राह पर लाए और अगर उन लोगों ने शिर्क किया होता तो उनका किया (धरा) सब अकारत हो जाता

أُو۟لَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ ءَاتَيْنَاهُمُ ٱلْكِتَٰبَ وَٱلْحُكْمَ وَٱلنُّبُوَّةَ ۚ ۚ فَإِن يَكْفُرْ بِهَا هَٰؤُلَاءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا ۖ لَّيْسُوا۟ بِهَا بِكَفِرِينَ

(पैगम्बर) वह लोग थे जिनको हमने (आसमानी) किताब और हुकूमत और नुबूवत अता फरमाई पस अगर ये लोग उसे भी न माने तो (कुछ परवाह नहीं) हमने तो उस पर ऐसे लोगों को मुकर्रर कर दिया है जो (उनकी तरह) इन्कार करने वाले नहीं

أُو۟لَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ هَدَىٰ ٱللَّهُ ۚ ۚ فَبِهَدَاهُمُ ٱقْتَدِهْ ۚ ۚ قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ۚ ۚ إِن هُوَ إِلَّا ذِكْرَىٰ لِّلْعَٰلَمِينَ

(ये अगले पैगम्बर) वह लोग थे जिनकी खुदा ने हिदायत की पस तुम भी उनकी हिदायत की पैरवी करो (ऐ रसूल उन से) कहो कि मैं तुम से इस (रिसालत) की मज़दूरी कुछ नहीं चाहता सारे जहाँ के लिए सिर्फ नसीहत है

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۚ إِذْ قَالُوا ۚ مَا أَنزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ بَشَرٍ مِّن شَيْءٍ ۚ قُل ۚ
 مَن أَنزَلَ الْكِتَابَ الَّذِي جَاءَ بِهِ ۚ مُوسَىٰ نُورًا ۚ وَهُدًى ۚ لِلنَّاسِ ۚ تَجْعَلُونَهُ ۚ
 قَرَاطِيسَ تُبْدُونَهَا وَتُخْفُونَ كَثِيرًا ۚ ۱ ۚ وَعِلِّمْتُم مَّا لَمْ تَعْلَمُوا ۚ أَنْتُمْ وَلَا آبَاؤُكُمْ ۚ
 قُلِ اللَّهُ ۚ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِي خَوْضِهِمْ يَلْعَبُونَ

और बस और उन लोगों (यहूद) ने खुदा की जैसी क़दर करनी चाहिए न की इसलिए कि उन लोगों ने (बेहूदे पन से) ये कह दिया कि खुदा ने किसी बशर (इनसान) पर कुछ नाज़िल नहीं किया (ऐ रसूल) तुम पूछो तो कि फिर वह किताब जिसे मूसा लेकर आए थे किसने नाज़िल की जो लोगों के लिए रौशनी और (अज़सरतापा (सर से पैर तक)) हिदायत (थी जिसे तुम लोगों ने अलग-अलग करके काग़जी औराक़ (कागज़ के पन्ने) बना डाला और इसमें को कुछ हिस्सा (जो तुम्हारे मतलब का है वह) तो ज़ाहिर करते हो और बहुतेरे को (जो खिलाफ़ मदआ है) छिपाते हो हालाँकि उसी किताब के ज़रिए से तुम्हें वो बातें सिखायी गयी जिन्हें न तुम जानते थे और न तुम्हारे बाप दादा (ऐ रसूल वह तो जवाब देंगे नहीं) तुम ही कह दो कि खुदा ने (नाज़िल फरमाई)

وَهَذَا كِتَابٌ أَنزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ ۚ مُّصَدِّقُ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَن حَوْلَهَا ۚ
 وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ ۲ ۚ وَهُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ

उसके बाद उन्हें छोड़ के (पडे झक मारा करें (और) अपनी तू तू मै मै में खेलते फिरें और (कुरान) भी वह किताब है जिसे हमने बाबरकत नाज़िल किया और उस किताब की तसदीक़ करती है जो उसके सामने (पहले से) मौजूद है और (इस वास्ते नाज़िल किया है) ताकि तुम उसके ज़रिए से अहले मक्का और उसके एतराफ़ के रहने वालों को (ख़ौफ़ खुदा से) डराओ और जो लोग आखिरत पर ईमान रखते हैं वह तो उस पर (बे ताम्मुल) ईमान लाते हैं और वही अपनी अपनी नमाज़ में भी पाबन्दी करते हैं

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ قَالَ أُوحِيَ إِلَيَّ وَلَمْ يُوحَ إِلَيْهِ شَيْءٌ ۚ وَمَنْ قَالَ سَأُنْزِلُ مِثْلَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ ۚ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَالْمَلَائِكَةُ بَاسِطُو أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُوا ۚ أَنْفُسَكُمُ ۚ الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ آيَاتِهِ ۚ تَسْتَكْبِرُونَ

और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो खुदा पर झूठ (मूठ) इफ़तेरा करके कहे कि हमारे पास वही आयी है हालाँकि उसके पास वही वगैरह कुछ भी नहीं आयी या वह शरूश दावा करे कि जैसा कुरान खुदा ने नाज़िल किया है वैसा मैं भी (अभी) अनक़रीब (जल्दी) नाज़िल किए देता हूँ और (ऐ रसूल) काश तुम देखते कि ये ज़ालिम मौत की सख्तियों में पड़ें हैं और फरिश्ते उनकी तरफ (जान निकाल लेने के वास्ते) हाथ लपका रहे हैं और कहते जाते हैं कि अपनी जानें निकालो आज ही तो तुम को रुसवाई के अज़ाब की सज़ा दी जाएगी क्योंकि तुम खुदा पर नाहक़ (नाहक़) झूठ छोड़ा करते थे और उसकी आयतों को (सुनकर उन) से अकड़ा करते थे

وَلَقَدْ جِئْتُمُونَا فُرْدَىٰ كَمَا خَلَقْنَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ وَتَرَكْتُمْ مَا خَوَّلْنَاكُمْ وَرَاءَ ظُهُورِكُمْ ۚ وَمَا نَرَىٰ مَعَكُمْ شُفَعَاءَكُمُ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ فِيكُمْ شُرَكَاءُ ۚ لَقَدْ تَقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ مَا كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ

और आखिर तुम हमारे पास इसी तरह तन्हा आए (ना) जिस तरह हमने तुम को पहली बार पैदा किया था और जो (माल व औलाद) हमने तुमको दिया था वह सब अपने पस्त पुशत (पीछे) छोड़ आए और तुम्हारे साथ तुम्हारे उन सिफारिश करने वालों को भी नहीं देखते जिन को तुम ख्याल करते थे कि वह तुम्हारी (परवरिश वगैरह) मैं (हमारे) साझेदार है अब तो तुम्हारे बाहरी ताल्लुकात मनक़तआ (खत्म) हो गए और जो कुछ ख्याल करते थे वह सब तुम से ग़ायब हो गए

ۚ إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوَىٰ ۚ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ۚ ذَلِكُمْ اللَّهُ ۚ فَأَنَّى تُؤْفَكُونَ

खुदा ही तो गुठली और दाने को चीर (करके दरख्त ऊगाता) है वही मुर्दे में से ज़िन्दे को निकालता है और वही ज़िन्दा से मुर्दे को निकालने वाला है (लोगों) वही तुम्हारा खुदा है फिर तुम किधर बहके जा रहे हो

فَالِقُ الْإِصْبَاحِ وَجَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا ۚ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ
الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ

उसी के लिए सुबह की पौ फटी और उसी ने आराम के लिए रात और हिसाब के लिए सूरज और चाँद बनाए ये खुदाए ग़ालिब व दाना के मुक़र्रर किए हुए किरदा (उसूल) हैं

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا ۚ بِهَا فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ قَدْ فَصَّلْنَا
الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ

और वह वही (खुदा) है जिसने तुम्हारे (नफे के) वास्ते सितारे पैदा किए ताकि तुम जँगलों और दरियाओं की तारिकियों (अंधेरों) में उनसे राह मालूम करो जो लोग वाक़िफ़कार हैं उनके लिए हमने (अपनी कुदरत की) निशानियाँ ख़ूब तफ़सील से बयान कर दी हैं

وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ ۚ وَحِدَةٍ ۚ فَمُسْتَقَرٌّ ۚ وَمُسْتَوْدَعٌ ۚ قَدْ فَصَّلْنَا
الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَفْقَهُونَ

और वह वही खुदा है जिसने तुम लोगों को एक शरूश से पैदा किया फिर (हर शरूश के) करार की जगह (बाप की पुश्त (पीठ)) और सौंपने की जगह (माँ का पेट) मुक़र्रर है हमने समझदार लोगों के वास्ते (अपनी कुदरत की) निशानियाँ ख़ूब तफ़सील से बयान कर दी हैं

وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۚ فَأَخْرَجْنَا بِهِ ۚ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ ۚ فَأَخْرَجْنَا مِنْهُ
خَضِرًا ۚ نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا ۚ مُّتْرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِن طَلْعِهَا قِنْوَانٌ ۚ دَانِيَةٌ ۚ
وَجَنَّاتٍ ۚ مِّنْ أَعْنَابٍ ۚ وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا ۚ وَغَيْرَ مُتَشَبِهٍ ۚ أَنْظُرُوا ۚ إِلَى
ثَمَرِهِ ۚ إِذَا أَثْمَرَ وَيَنْعِهِ ۚ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكُمْ لَآيَاتٍ ۚ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ

और वह वही (क्रादिर तवाना है) जिसने आसमान से पानी बरसाया फिर हम ही ने उसके ज़रिए से हर चीज़ के कोए निकालें फिर हम ही ने उससे हरी भरी टहनियाँ निकालीं कि उससे हम बाहम गुत्थे दाने निकालते हैं और छुहारे के बोर (मुन्जिर) से लटके हुए गुच्छे पैदा किए और अंगूर और ज़ैतून और अनार के बागात जो बाहम सूरत में एक दूसरे से मिलते जुलते और (मजे में) जुदा जुदा जब ये पिघले और पक्के तो उसके फल की तरफ ग़ौर तो करो बेशक अमन में ईमानदार लोगों के लिए बहुत सी (खुदा की) निशानियाँ हैं

وَجَعَلُوا ۚ لِلَّهِ شُرَكَاءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ ۚ وَخَرَقُوا ۚ لَهُ ۚ بَنِينَ وَبَنَاتٍ ۚ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ ۚ
سُبْحَنَهُ ۚ وَتَعَالَى عَمَّا يُصِفُونَ

और उन (कम्बख्तों) ने जिन्नात को खुदा का शरीक बनाया हालाँकि जिन्नात को भी खुदा ही ने पैदा किया उस पर भी उन लोगों ने बे समझे बूझे खुदा के लिए बेटे बेटियाँ गढ़ डालीं जो बातों में लोग (उसकी शान में) बयान करते हैं उससे वह पाक व पाकीज़ा और बरतर है

بَدِيعُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ أَنَّى يَكُونُ لَهُ ۚ وَلَدٌ ۚ وَلَمْ تَكُنْ لَهُ ۚ صَحِبةٌ ۚ ۚ وَخَلَقَ
كُلَّ شَيْءٍ ۚ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۚ

सारे आसमान और ज़मीन का मवविद (बनाने वाला) है उसके कोई लड़का क्योंकर हो सकता है जब उसकी कोई बीबी ही नहीं है और उसी ने हर चीज़ को पैदा किया और वही हर चीज़ से खूब वाक्फि है

ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ خَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ فَأَعْبُدُوهُ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ ۚ وَكِيلٌ ۚ

(लोगों) वही अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार है उसके सिवा कोई माबूद नहीं वही हर चीज़ का पैदा करने वाला है तो उसी की इबादत करो और वही हर चीज़ का निगेह बान है

لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَرَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ

उसको आँखें देख नहीं सकती (न दुनिया में न आखिरत में) और वह (लोगों की) नज़रों को खूब देखता है और वह बड़ा बारीक बिन (देखने वाला) खबरदार है

قَدْ جَاءَكُمْ بَصَائِرُ مِنْ رَبِّكُمْ ۚ فَمَنْ أَبْصَرَ فَلِنَفْسِهِ ۚ ۚ وَمَنْ عَمِيَٰ فَعَلَيْهَا ۚ وَمَا
أَنَا ۚ عَلَيْكُمْ بِحَفِيزٍ ۚ

तुम्हारे पास तो सुझाने वाली चीज़ें आ ही चुकीं फिर जो देखे (समझे) तो अपने दम के लिए और जो अन्धा बने तो (उसका) ज़रर (नुकसान) भी) खुद उस पर है और (ऐ रसूल उन से कह दो) कि मैं तुम लोगों का कुछ निगेहबान तो हूँ नहीं

وَكَذَلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ وَلِيَقُولُوا ۖ دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهُ ۖ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ

और हम (अपनी) आयतें यूँ उलट फेरकर बयान करते हैं (ताकि हुज्जत तमाम हो) और ताकि वह लोग ज़बानी भी इक़रार कर लें कि तुमने (क़ुरान उनके सामने) पढ़ दिया और ताकि जो लोग जानते हैं उनके लिए (क़ुरान का) खूब वाज़ेह करके बयान कर दें

اتَّبِعْ مَا أَوْحَىٰ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ ۖ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۖ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ

जो कुछ तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से 'वही' की जाए बस उसी पर चलो अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुशरिकों से किनारा कश रहो

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكُوا ۚ وَمَا جَعَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِظًا ۚ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ

بَوَكِيلٍ ۚ

और अगर खुदा चाहता तो ये लोग शिर्क ही न करते और हमने तुमको उन लोगों का निगेहबान तो बनाया नहीं है और न तुम उनके ज़िम्मेदार हो

وَلَا تَسُبُّوا ۖ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ فَيَسُبُّوا ۖ اللَّهَ عَدْوًا بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ كَذَلِكَ زَيْنًا لِّكُلِّ أُمَّةٍ عَمَلُهُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ مَرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا ۚ يَعْمَلُونَ

और ये (मुशरिकीन) जिन की अल्लाह के सिवा (खुदा समझ कर) इबादत करते हैं उन्हें तुम बुरा न कहा करो वरना ये लोग भी खुदा को बिना समझे अदावत से बुरा (भला) कह बैठें (और लोग उनकी ख्वाहिश नफसानी के) इस तरह पाबन्द हुए कि गोया हमने खुद हर गिरोह के आमाँल उनको सँवाकर अच्छे कर दिखाए फिर उन्हें तो (आखिरकार) अपने परवरदिगार की तरफ लौट कर जाना है तब जो कुछ दुनिया में कर रहे थे खुदा उन्हें बता देगा

وَأَقْسَمُوا ۖ بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَاءَتْهُمْ ءَايَةٌ ۖ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ۚ قُلْ إِنَّمَا الْآيَةُ

عِنْدَ اللَّهِ ۚ وَمَا يُشْعِرُكُمْ أَنَّهَا إِذَا جَاءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ

और उन लोगों ने खुदा की सख्त सख्त क़समें खायीं कि अगर उनके पास कोई मौजिजा आए तो वह ज़रूर उस पर ईमान लाएँगे (ऐ रसूल) तुम कहो कि मौजिजे तो बस खुदा ही के पास हैं और तुम्हें क्या मालूम ये यक़ीनी बात है कि जब मौजिजा भी आएगा तो भी ये ईमान न लाएँगे

وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوا بِهِ ۖ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ وَنَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ
يَعْمَهُونَ

और हम उनके दिल और उनकी आँखें उलट पलट कर देंगे जिस तरह ये लोग कुरान पर पहली मरतबा ईमान न लाए और हम उन्हें उनकी सरकशी की हालत में छोड़ देंगे कि सरगिरदाँ (परेशान) रहें